Chapter 3

प्रारंभिक भारत का इतिहास

Kamlesh Nath, Department of History

Shri Jain Terapanthi College, Ranawas, Pali

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत

स्रोत वे साधन या प्रमाण होते हैं जिनके आधार पर इतिहासकार प्राचीन काल की घटनाओं जीवन शैली संस्कृति राजनीति और समाज के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

मुख्य रूप से **दो प्रकार के स्रोत** प्राप्त होते हैं।

1 **पुरातात्विक स्रोत [Archaeological Sources]**

2 **साहित्यिक स्रोत [Literary Sources]**

- ✓ पुरातात्विक स्रोत .इसमें हमें स्थापत्य मूर्तियां सिक्के भौतिक अवशेष मिट्टी के बर्तन महल स्तूप गुफाएं खुदाई से अन्य वस्तुएं प्राप्त होती है । इससे हमें उस काल विशेष की कला संस्कृति रहन.सहन के बारे में जानकारी प्राप्त होती हैं।
- ✓ साहित्यिक स्रोत .इसमें हमें वेद उपनिषद महाकाव्य जैन एवं बौद्ध ग्रंथ विदेशी यात्रियों के विवरण और शिलालेख ताम्रपत्र आदि मिलते हैं यह हमें तत्कालीन समाज धर्म राजनीति और संस्कृति के बारे में बतलाता है।

·कुछ महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्रोत

अभिलेख सिक्कों से भी कहीं अधिक महत्व के हैं

अभिलेख। इनके अध्ययन को पुरालेखशास्त्र कहते हैं और इनकी तथा दूसरे पुराने दस्तावेजों की प्राचीन तिथि के अध्ययन को पुरालिपिशास्त्र कहते हैं। अभिलेख मुहरों प्रस्तरस्तंभों स्तूपों चट्टानों और ताम्रपत्रों पर मिलते हैं तथा मंदिर की दीवारों और ईंटों या मूर्तियों पर भी। समग्र देश में आरंभिक अभिलेख पत्थरो पर खुदे मिलते हैं। किंतु ईसा के आरंभिक शतकों में इस काम में ताम्रपत्रों का प्रयोग आरंभ हुआ।

सिक्के सिक्कों के अध्ययन को मुद्रा शास्त्र कहते हैं आजकल की तरह प्राचीन भारत में कागज की मुद्रा का प्रचलन नहीं था पर धातु धन या धातु मुद्रा चलता था पुराने सिक्के तांबे चांदी सोने और सीसे के बनते थे।पकाई गई मिट्टी के बने सिक्कों के सांचे बड़ी संख्या में मिले हैं इनमें से अधिकांश सांचे कुषाण काल के अर्थात ईसा की आरंभिक तीन सदियों के हैं। गुप्तोत्तर काल में ये सांचे लगभग लुप्त हो गए।

सिक्कों से आर्थिक इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है राजाओं से अनुमति लेकर व्यापारियों और स्वर्णकारों की श्रेणियां ने भी अपने कुछ सिक्के चलाए थे।

सबसे अधिक सिक्के मौर्य उत्तर कालों में मिले हैं जो विशेषत सीसे पोटीन तांबे कांसे चांदी और सोने के हैं गुप्त शासको ने सोने के सिक्के सबसे अधिक जारी किए।

·**विदेशी विवरण** .पर्यटक बनकर या भारतीय धर्म अपना कर अनेक यूनानी रोमन और चीनी यात्री भारत आए और अपनी आंखों देखे भारत के विवरण लिख छोड़ें।हमें सिकंदर के बारे में ज्यादातर जानकारी यूनानी स्रोतों पर ही मिलती हैं यूनानी लेखकों ने 326 ईसा पूर्व में भारत पर हमला करने वाले सिकंदर महान के समकालीन के रूप में सैंड्राकोटस के नाम का उल्लेख किया है।

चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में दूत बनकर आए मेगास्थनीज की इंडिका उन उद्धरण के रूप में ही सुरक्षित हैं जो अनेक प्रख्यात लेखको की रचनाओं में आए हैं इंडिका अतिरंजित बातों से मुक्त नहीं है पर ऐसी बातें तो प्राचीन विवरणनो में कई हद तक पाई जाती हैं यूनानी भाषा में लिखी गई पेरीप्लस ऑफ द एरिट्रिय सी और टॉलमी की ज्योग्राफी नामक पुस्तकों में भी प्राचीन भूगोल और वाणिज्य के अध्ययन के लिए प्रचुर महत्वपूर्ण सामग्री मिलती हैं। प्लनी की नेचुरलिस हिस्टोरिका ईसा की पहली सदी की है। यह लैटिन भाषा में है और हमें भारत

ISBN: 978-93-344-1269-7

और इटली के बीच होने वाले व्यापार की जानकारी देती है।

चीनी पर्यटकों में प्रमुख है फाह्यान और हुवेनसंघ।दोनों बौद्ध भिक्षु थे और बौद्ध तीर्थ का दर्शन करने तथा बौद्ध धर्म का अध्ययन करने भारत आए थे फाह्यान ईसा की पांचवी सदी के प्रारंभ में आया था और हुवानसांघ सातवीं सदी के दूसरे क्वार्टर में फाह्यान ने गुप्तकालीन भारत की सामाजिक धार्मिक और आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला एवं हुवेनसंघ ने इसी प्रकार की जानकारी हर्षकालीन भारत के बारे में दी है।

1 **प्रागैतिहासिक काल-** कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है पूर्णत उत्खनन पर निर्भर।

2 **आघ ऐतिहासिक काल-** लिखित लिपि है लेकिन उसे पढ़ने में सफलता नहीं मिली है।

3 **ऐतिहासिक काल-** लिखित साधनों पर निर्भर एवं इसको पढ़ने में भी सफलता मिली है।

पुरापाषाण काल .

पुरापाषाण काल को तीन भागों में विभाजित किया गया है–

अ पूर्व निम्न पुरापाषाण काल

ब मध्य पुरापाषाण काल

स उच्च पुरापाषाण काल

मध्य पाषाण काल [9000BCE – 4000BCE]

मध्य पाषाण काल के उपकरणों माइक्रोलिथ की भारत में सर्वप्रथम खोज 1867 ईस्वी में ए सी एल कार्लाइल ने विंध्याचल क्षेत्र में की है।

सूक्ष्म पाषाण उपकरण में मध्य पाषाण काल का प्रमुख उपकरण चेल्सेडोनी है।

महत्वपूर्ण स्थल–

गुजरात- लंघनाज ,रतनपुर
आंध्र प्रदेश नागार्जुनकोंडा ,गिद्लूर
कर्नाटक संगनकल्लु , जल्लाहल्ली
पश्चिम बंगाल वीरभानपुर
राजस्थान तिलवाड़ा ;बाड़मेर बागोर ;भीलवाड़ा
मध्यप्रदेश भीमबेटका

भीमबेटका [आदि मानव द्वारा शैलचित्र]

तमिलनाडु- टेरी समूह

- ✓ बागोर भीलवाड़ा तथा आदमगढ़ मध्य प्रदेश में 5000 ईसवी पूर्व के पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त जो कि पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य है।
- ✓ बागोर; भीलवाड़ा उत्खनन वी एन मिश्र ने किया है कोठारी नदी के किनारे स्थित। मध्य पाषण काल के महत्वपूर्ण स्थलों में से एक।
- ✓ भारत में अग्नि का प्रयोग मध्य पाषाण काल के अंतिम चरण या नवपाषाण काल में हुआ था।

नवपाषाण काल [4000BCE-1000BCE]

नवपाषाण शब्द पहली बार 1865 ईस्वी में जॉन लुब्बाक ने दिया। भारत में प्रथम नवपाषाण कुठार की खोज ले मेसूरियर ने 1860 ईस्वी में टोंस नदी घाटी उत्तर प्रदेश में की है भारत में प्रथम नवपाषाण कुठार 1842 में मिदोज टेलर को रायचूर कर्नाटक में लिंग सुगुर से मिला है नवपाषाण काल का प्रमुख औजार पत्थर की कुल्हाड़ी है इस काल के उपकरण पॉलिश किए हुए पत्थरो के बने हैं अतः यह पॉलिश किए हुए उपकरणों की संस्कृति कही जाती हैं। नवपाषाण काल में कृषि की सर्वप्रथम शुरुआत हुई सबसे बड़ी खोज गेहूं मानी जाती है जौ और मटर की भी खेती शुरू हुई।

मेहरगढ़ भारतीय उपमहाद्वीप में नवपाषाण काल की प्राचीनतम बस्ती 7000 ईसा पूर्व की बलूचिस्तान;पाकिस्तान में स्थित। इसे बलूचिस्तान का अन्न का भंडार एवं रोटी की टोकरी भी कहा जाता है मेहरगढ़ से कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य 7000 ईसा पूर्व में मिले हैं। मेहरगढ़ बोलन नदी के किनारे स्थित है पालतू भैंस का प्राचीनतम साक्ष्य मेहरगढ़ से प्राप्त हुआ है।

ISBN: 978-93-344-1269-7

मेहरगढ़ की मुख्य विशेषता कच्ची ईटों से सिगार के आकार में अंगीठियों से युक्त मकान।

प्रमुख नवपाषाण कालीन स्थल–

कश्मीर बुर्जहोम गुफकराल कनिष्कपुरा । इनकी मुख्य विशेषता गर्तवास अनेक प्रकार के मृदभांड माइक्रोलिथ की अनुपस्थिति पत्थर और हड्डियों के औजार।

उत्तर प्रदेश इलाहाबाद स्थित कोल्डीहवा महागढ़ा पंचोह। कोल्डीहवा से चावल;धान का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त होता है। लहुरा देव; उत्तर प्रदेश से लगभग 9000 से 8000 ईसा पूर्व का चावल की खेती का साक्ष्य नवीनतम खोज में मिला है इसे भारत में खेती का प्राचीनतम साक्ष्य माना गया है।

बिहार चिरांद

कर्नाटक मास्की, पिक्कलीहल ब्रह्मगिरी

आंध्रप्रदेश नागार्जुनकोंडा उतनूर

तमिलनाडु पेयमपल्ली

कर्नाटक पिकलीहाल से भस्मटीले मिले हैं

- ✓ 2001 में पी राजेंद्रन ने तमिलनाडु स्थित ओदे से शिशुकपाल प्राप्त किया है जो पाषाणकालीन था।
- ✓ मृदभांड सर्वप्रथम नवपाषाण काल में बनने लगे एवं इसी काल में खेती की शुरुआत हुई। नवपाषाण काल के प्रमुख औजार हैं सेल्ट कुल्हाड़ी बछूले छेना।
- ✓ स्थिर ग्रामीण जीवन एवं जानवरों को पालतू बनाना।

ताम्रपाषाण काल:–

मानव द्वारा व्यवहार में लाई गई पहली धातु (तांबा) थी। गैरिक रंग मृदभांड संस्कृति के विशिष्ट मृदभांड थे जबकि काले एवं लाल मृदभांड सर्वाधिक प्रचलित थे। नवपाषाण के बाद धातु युग आया मुख्यत:ग्रामीण लोग थे। भारत में ताम्र पाषाण युग के मुख्य क्षेत्र दक्षिणी पूर्वी राजस्थान की बनास घाटी (आहड़ एवं गिलुंड), पश्चिम मध्य प्रदेश(मालवा,कायथा, एरन) पश्चिम महाराष्ट्र एवं दक्षिण–पूर्वी भारत हैं।

विभिन्न ताम्र पाषाण संस्कृतिया –

a. गणेश्वर–जोधपुरा संस्कृति

b. बनास घाटी /आहड़ संस्कृति

c. मालवा संस्कृति

d. जोरवे संस्कृति

विविध मृदभांड संस्कृतिया–

- गैरिक मृदभांड
- कृष्ण या काला एवं लाल मृदभांड
- चित्रित धूसर मृदभांड
- उत्तरी काले पॉलिसदार मृदभांड –यह सर्वश्रेष्ठ मृदभांड है।
- लाल पॉलिसदार मृदभांड

लौह युग

भारत में लौह का प्राचीनतम प्रमाण गंगा की सहायक काली नदी के किनारे स्थित अतरंजी खेड़ा (उत्तर प्रदेश)से मिला है जिसकी खोज 1861–62 ईस्वी में अलेक्जेंडर कनिंघम ने की तथा यहां खुदाई कार्य आर.सी. गॉड के नेतृत्व में हुआ अतरंजी खेड़ा से धातुशोधन करने वाली भटियो के अवशेष मिले है। राजस्थान में लोहे का प्राचीनतम साक्ष्य आहाड से प्राप्त हुआ है।

ISBN: 978-93-344-1269-7